Indian Streams Research Journal
Vol -3 , ISSUE –6, July.2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

आर. के. नारायण के अंग्रेजी उपन्यास 'दि गाइड' के हिंदी अनुवादों का तुलनात्मक अनुशीलन

भारत बापुराव पाटिल

पी-एच.डी हिंदी (अनुवाद प्रौघोगिकी)

अनुवाद प्रौघोगिकी विभाग अनुवाद एवं निर्वचन विघापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविघालय

गांधी हिल्स, वर्धा (महाराष्ट्र)

सारांश

प्रस्तुत शोध में भारत के प्रमुख लेखक, जो कि भारतीय-अंग्रेज़ी साहित्य परंपरा के प्रमुखतम उपन्यासकार हैं, आर. के. नारायण के 'दि गाइड' उपन्यास के अनुवाद का अध्ययन किया गया है। 'दि गाइड' उपन्यास के हिंदी में दो अनुवाद हुए हैं। पहला अनुवाद 2005 में रमा तिवारी ने किया था और दूसरा अनुवाद शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने 2008 में किया था। दोनों ही अनुवादों की अपनी विशिष्ट भाषा-शैली है, जो घटनाओं के विवरण में कई अहम अंतरों को भी रेखांकित करती है। रमा तिवारी का अनुवाद एक तरह से भावानुवाद है जिसमें कई जगह विवरणों और विस्तार को छोड़ दिया गया है, जबकि शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने विवरणों को शब्द-प्रति-शब्द अनूदित किया है। प्रस्तुत शोध में इन अनुवादों का अनुवाद-विज्ञान की संपूर्ण दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन और अनुशीलन किया गया है।

संकेत शब्द

अनुवाद मूल्यांकन, अनुवाद समीक्षा, अनुवाद तुलनात्मक परिशीलन, अनुवाद विश्लेषण, व्यतिरेकी विश्लेषण, व्यतिरेकी अध्ययन।

प्रस्तावना

आज का युग 'अनुवाद' का युग है। वर्तमान युग में अनुवाद की मांग और कार्य-क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। अनुवाद की यह मांग विभिन्न विषय क्षेत्रों और साहित्य की विभिन्न विधाओं में स्पष्ट रूप में नजर आती है। स्थिति यह हो चुकी है कि जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो कि जहां सोच और व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर आज का मनुष्य अनुवाद पर आश्रित न हो। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के बीच परिव्याप्त दूरी में कमी हो रही है। प्रांतीय भाषाओं में रचित साहित्य को राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय महत्व मिलने तक का मार्ग अनुवाद के कारण सुगम-सरल हो जाता हैं। अनुवाद के कारण एक भाषा की सामग्री से एकाधिक भाषाओं के पाठक लाभान्वित होते है। विश्व के सभी देशों-प्रदेशों-समाजों में भौगोलिक, सामाजिक, जातिगत, आर्थिक और भाषिक

सीमाओं के बीच वैचारिक, सृजनात्मक और कार्यात्मक समन्वय बनाए रखने के लिए अनुवाद सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम है। इस दृष्टि से अनुवाद का महत्व स्वंयसिद्ध है।

किसी भी भाषा की महान साहित्यिक कृतियों के प्रति विश्व-मानव की जिज्ञासा अन्य भाषा-भाषियों को साहित्यिक अनुवाद करने की प्रेरणा का निमित्त बनती है। साहित्यानुवाद एक प्रकार से सृजनात्मक प्रेरणा से अभिभूत होकर इस ओर उन्मुख होता है। वह चाहता है कि अन्य भाषाओं में उपलब्ध महान साहित्यिक कृतियों को अपनी भाषा में लाकर अपनी भाषा में पाठकों तक पहुंचाया जाए ताकि वे भी उत्तम कृतियों के पठन-वाचन का आनंद ले सके, उनका आस्वादन कर सके। इस विचार दृष्टि से अनुप्रमाणित होकर ही शेक्सपियर, टॉलस्टाय आदि विश्व-विख्यात साहित्यकारों की कृतियां विश्व की अनेकानेक भाषाओं में अनूदित हुईं। इसी प्रकार बंकिम चंद्र चटर्जी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कालिदास, वाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास, कबीरदास, प्रेमचंद आदि की रचनाएं केवल भारतीय भाषाओं में ही नहीं, अपितु अनेकानेक विदेशी भाषाओं में अनूदित हुईं और वे विश्व-प्रसिद्ध रचनाकार हुए।

भारतीय साहित्य भारत की अनेक भाषाओं के साहित्य का संचित कोश है। भारतीय साहित्य स्वयं में अत्यंत संपन्न है। इसमें भारत की संस्कृति की जातीयता की समाज की ओर उनकी संवेदना विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है। भारतीय अंग्रेजी साहित्य में आर. के. नारायण के साहित्य में मध्यवर्ग एक केंद्रीय भूमिका में दिखता है। इस वर्ग की इच्छाएं, अपेक्षाएं तथा समकालीन सामाजिक, राजनीतिक समीकरण के मध्यवर्ग पर होने वाले प्रभाव का चित्र आर. के. नारायण के उपन्यासों की कथावस्तु रही है। अतः अनुवाद की दृष्टि से यह कृति महत्वपूर्ण है।

शोध अध्ययन क्षेत्र (Area of Research Study)

प्रस्तुत शोध के अध्ययन क्षेत्र में आर. के. नारायण द्वारा दक्षिण भारतीय परिवेश में अंग्रेजी में लिखित 'दि गाइड' उपन्यास का हिंदी अनुवाद शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान साथ ही रमा तिवारी ने हिंदी भाषा परिवेश के अनुसार किया है। इस दोनों भाषा के परिवेशगत विश्लेषण, विवेचन और मूल्यांकन किया गया है। दोनों ही भाषाओं की परिवेशगत भिन्नता है। साथ ही इनमें प्रयुक्त शब्द भी लक्ष्य भाषा की प्रकृति अनुसार है। इन्हीं सभी का मूल्यांकन प्रस्तुत शोध के अध्ययन क्षेत्र में किया गया है।

अध्ययन का महत्त्व (Importance of Study)

अध्ययन के महत्त्व में दोनों भाषाओं की कृतियों (मूल और अनूदित) में प्रयुक्त शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन करके मूल कृति के शब्द का अनूदित कृति में सही अनुवाद या रूपांतरण हुआ है या नहीं यह देखना है। साथ ही वाक्य, उपवाक्य, पद, पदबंध और शब्द के स्तर पर मूल शब्द के भाव या अर्थ का सही संप्रेषण हुआ है या नहीं, साथ ही किया गया अनुवाद मूल के कितने नजदीक है, यह सब इस शोध अध्ययन के महत्त्व में है। अनुवाद मूल्यांकन के उपलब्ध सिद्धांत के आधार पर इन कोटियों को विश्लेषित करना भी इस शोध अध्ययन के महत्त्व में है।

शोध का उद्देश्य (Aim of Research)

आर. के. नारायण के कृतित्त्व का और उनके योगदान का परिचय उनके उपन्यास के विभिन्न अनुवादों के माध्यम से हिंदी पाठकों से करवाने का उद्देश्य है। साथ में विविध अनुवादों का साहित्यिक दृष्टि से और पठनीयता की दृष्टि से आकलन करने का उद्देश्य है।

शोध की परिकल्पना (Research Hypothesis)

प्रस्तुत शोध की निम्न परिकल्पनाएँ हैं:-

1. मूल उपन्यास के अर्थ-ग्रहण और दोनों हिंदी अनुवादों के अर्थ-ग्रहण में, अनुवाद की प्रक्रिया में कई मूलभूत अंतर हैं।
2. मूल उपन्यास का कथा-परिवेश दक्षिण भारतीय है, जबकि हिंदी अनुवादों में दक्षिण भारतीय कथा-परिवेश का चित्रांकन पूरी तरह से नहीं हुआ है। अनूदित पाठों में उत्तर भारतीय सांस्कृतिक परिवेश के प्रतिबिंब हैं।
3. रमा तिवारी का हिंदी अनुवाद संक्षिप्त है, उन्होंने कई विवरणों को छोड़ दिया है, जबकि शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने मूल पाठ का परित्याग बहुत कम किया है।
4. आधुनिक अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते हुए अंग्रेज़ी के कई शब्दों का हिंदी में लिप्यंतरण करना होगा, तभी सार्थक अनुवाद संभव हो सकेगा।
5. मूल 'दी गाइड' की भाषा समृद्ध तथा सुरिचिपूर्ण है। हिंदी अनुवादों में मूल भाषिक अभिव्यक्तियों और शैलियों की विशेषताएँ मज़बूती से अभिव्यक्त नहीं होती हैं।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन के साथ-साथ समीक्षात्मक अध्ययन प्रविधि को अपनाया गया है। इसमें शब्द संरचना का आधार, वाक्य संरचना का आधार, भाषा का समाज-सांस्कृतिक आधार सम्मिलित है। साथ में मूल पाठ के आधार पर अनूदित पाठ की तुलना करते हुए दोनों भाषाओं की व्याप्ति और सीमा को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

विषय की आवश्यकता के अनुरूप इस शोध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। वह इस तरह से है।

प्रथम अध्याय – अनुवाद की अवधारणा : अर्थ व्याख्या और व्याप्ति

इस अध्याय में अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए, अनुवाद के स्वरूप को व्यापक संदर्भ में विवेचित किया गया है। इसके बाद अनुवाद प्रक्रिया करते हुए नाइडा और नाइडा कैटफोर्ड के चिंतन को विश्लेषित किया है। साथ ही अनुवाद के प्रकार, साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप और उनकी समस्याओं को रेखाकित किया गया।

द्वितीय अध्याय –आर के नारायण के अंग्रेजी उपन्यास ' दी गाइड' का रचनागत परिवेश : एक विवेचन

इस अध्याय में 'दी गाइड' उपन्यास के लेखक आर. के. नारायण के जीवनी और कृतित्व का विवेचन किया गया है। इसमें आर. के. नारायण उपन्यासों के विविध आयामों की चर्चा करते हुए प्रमुख उपन्यास को रेखांकित किया गया है। इसी तरह हिंदी अनुवादकों रमा तिवारी और शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान, के अनुवादकीय व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य को उद्घाटित किया गया।

तृतीय अध्याय – हिंदी अनुवादों का पारस्परिक वैशिष्ट्य

इस अध्याय में रमा तिवारी और शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान के हिंदी अनुवादों का पारस्परिक वैशिष्ट्य का अध्यपन किया गया। इसमें संरचनात्मक स्वरूप, भावनात्मक स्वरूप, अनुवादनीयता की स्थिति एवं समाधान का आधार बनाया गया।

चतुर्थ अध्याय – अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित उपन्यास ' दी गाइड' के दो प्रथम हिंदी अनुवादों का तुलनात्मक परिशीलन

इस अध्याय दोनों अनुवादों भाषाई अध्ययन करते हुए तुलनात्मक परिशीलन किया गया। इसके लिए दोनों अनुवादों की शब्द चयन शक्ति के साथ शब्दानुवाद और भावानुवाद को रेखांकित किया गया।

पंचम अध्याय – ' दी गाइड' उपन्यास के हिंदी अनुवादों का समीक्षात्मक विवेचन

इस अध्याय में समीक्षा के सैद्धांतिक पक्ष को उद्घाटित करते हुए समीक्षात्यक विवेचन किया गया है। इसमें शब्द के धरातल पर, शैली के धरातल पर ओर हिंदी अनुवाद के लिप्यंतरण की समीक्षा की गई है।

षष्ठ अध्याय – 'दी गाइड' उपन्यास के हिंदी अनुवादों का मूल्यांकन

इस अध्याय में सबसे पहले मूल्यांकन के सैद्धांतिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए हिंदी अनुवादों का शब्द के स्तर पर, प्रोक्ति के स्तर पर, मुहावरे लोकोक्ति के स्तर पर, सामाजिक – सांस्कृतिक स्तर पर मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

अनुवाद की इन्हीं विशिष्टताओं के आधार पर प्रस्तुत शोध में 'दि गाइड' के कुछ अंशों की विवेचना की गई है। वह इस तरह है-

1. मूलः- 'I'll not permit anyone to do this. God alone is entitled to such a prostration. He will destroy us if we attempt to usurp his rights.' (P. No. 16)

हिंदी अनुवादः- 'नही यह सब मैं पसंद नहीं करता। केवल ईश्वर ही वंदनीय है। ईश्वर बनने की कोशिश करने का अर्थ हुआ अपने सर्वनाश को आमंत्रण देना।' (रमा तिवारी, पृ. क्र. 18)

अनुवाद वैशिष्ट्यः- यहाँ पर अनुवादक ने 'If we attempt to usurp his rights' का भावानुवाद 'ईश्वर बनने की कोशिश करना' किया है, जो कि लक्ष्य भाषा में सटीक अर्थों के अनुसार सुंदर बन पड़ा है।

2. मूलः- 'It's His first. Let the offering go to Him, first; and we will eat the remnant. By giving to god, do you know how it multiplies, rather than divides?' (P. No. 18)

हिंदी अनुवादः- 'सर्वप्रथम देवता को भोग लगाना चाहिए। फिर हम लोग प्रसाद ग्रहण करेंगे। भगवान को चढाने से चीज़ में बरकत होती है। (रमा तिवारी, पृ. क्र. 20)

अनुवाद वैशिष्ट्यः- यहाँ अनुवादक ने 'It's his first let the offering go to him first' का भावानुवाद 'सर्वप्रथम देवता को भोग लगाना चाहिए' किया है जो लक्ष्य भाषा के अनुसार अनिवार्य था। 'Do you know' का अनुवाद नहीं किया फिर भी वाक्य के अर्थ पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। मूल वाक्य अंग्रेज़ी संस्कृति और भाषा शैली के अनुरूप है। रमा तिवारी ने इस वाक्य का भावानुवाद किया है। चूंकि हिंदी संस्कृति या आम बोलचाल की शैली में ऐसे वाक्य प्रयुक्त नहीं होते, इसलिए अटपटा सा जान पड़ता है। साथ ही, 'It multiplies, rather than divides' का भावानुवाद 'भगवान को चढाने से ही बरकत होती है' किया है, जो कि हिंदुस्तानी संस्कृति के लिहाज़ से उपयुक्त है।

1 संरचनात्मक स्वरूप

2 भावनात्मक स्वरूप

3 अनुवादनीयता: स्थिति एवं समाधान

शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने मूल कृति का अनुवाद करते समय अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित की है। हालांकि हर अनुवाद की तरह इसकी भी कुछ सीमाएँ हैं। मूल कृति के प्रभाव अनुवाद में भी मौलिक रूप से प्रकट हुए हैं। अनुवाद संपूर्णता में पठनीय बन पड़ा है। अनुवाद में वाक्यों को संक्षिप्त नहीं किया गया है। औपन्यासिक प्रभाव के लिए कई जगह भावानुवाद किया गया है। यह अनुवाद अपनी संप्रेषणीयता की वजह से ज़्यादा प्रभावित करता है और वाक्यों की संप्रेषणीयता को महत्व देते हुए अनुवादकों ने मूल कृति और अनुवाद की समरूपता को प्राथमिकता दी है।

अनुवाद की इन्हीं विशिष्टताओं के आधार पर प्रस्तुत शोध में शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान के अनुवाद 'गाइड' के कुछ अंशों की विवेचना इस तरह से है।

1. मूल : The stars were out. The Taluka office gone sounded seven. A perfect evening as it had been for years and years. I had seen the same scene at the same hour years and years. Did those children never grow up ? I became a little sentimental and poetic, probably because of companion at my side. My feelings and understanding seemed to have become suddenly heightened. (page No. 145)

हिंदी अनुवाद :- आकाश में तारे उग आए थे। तालुके के दफ्तर से सात के घंटे की आवाज आई। बड़ी हसीन शाम थी – जैसी वर्षों से चली आ रही थी। मैं बरसों से शाम के इसी वक्त यह सुंदर दृश्य देखता आया था। क्या ये बच्चे कभी बड़े नहीं होते? मैं कुछ भावुक और काव्यमय हो उठा, शायद अपने साथ रोजी के होने के कारण मेरी भावनाएँ और चेतना जैसे यकायक तीव्र हो गई। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृष्ठ क्र. 95)

अनुवाद वैशिष्ट्य:- यहाँ पर अनुवादक ने भावानुवाद के साथ- साथ, शब्दानुवाद किया है। 'The stars wear out' का भावानुवाद ' आकाश में तारे उग आए थे '। 'Sounded seven' का अनुवाद 'सात के घंटे की आवाज आई'। 'A perfect evening' का अनुवाद 'बड़ी हसीन शाम थी'। 'Did those children never grow up' का शब्दानुवाद' क्या ये बच्चे कभी बड़े नहीं होते?' इस प्रकार किया है।

2 मूल : Why can't she go to her husband and fall at his feet? You know, living with a husband is no joke, as these modern girls imaging. No husband worth the name was ever conquered by powder and lipstick alone you know your father more than once....., (page No. 154)

हिंदी अनुवाद :- क्यों ? वह अपने पति के पास जाकर उसके पाँवों में क्यों नहीं गिर सकती? तुम तो जानते हो कि किसी भी पति के साथ रहना मजाक नहीं, जैसा कि ये आजकल की लड़कियाँ सोचती हैं। किसी अच्छे पति का दिल सिर्फ पाउडर और लिपस्टिक से नहीं जीता जा सकता। तुम तो जानते हो, तुम्हारे बाप ने कितनी बार..." (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृष्ठ क्र.102)

अनुवाद वैशिष्ट्य :- यहाँ पर अनुवादक ने भावानुवाद के साथ–साथ लिप्यंतरण का प्रयोग किया है, जो लक्ष्य भाषा में सटीक अर्थ देने के लिए अनिवार्य था । 'fall at his feet ? 'का अनुवाद' उसके पाँवों में क्यों नहीं गिर सकती ?' 'No husband worth b the name was ever conquered' का भावानुवाद ' किसी अच्छे पति का दिल' किया है। 'powder and lipstick' का लिप्यंतरण 'पाउडर और लिपस्टिक' किया है।

अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित उपन्यास 'दी गाइड ' के दो प्रथम हिंदी अनुवादों का तुलनात्मक परिशीलन

1 अनुवादक रमा तिवारी (2005)

2 अनुवादक शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान (2008)

प्रस्तुत अध्याय में अनुवादक रमा तिवारी और शिवदान सिंह चौहान एवं विजय चौहान द्वारा अनुवादित मूल कृति के अनुवादों के तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि किसी भी साहित्यिक रचना के अनुवाद में अनुवादक के लिए मूल लेखक के कथ्य की संवेदना और अभिव्यंजना को उतार पाना अथवा आद्योपांत उसका सम्यक निर्वाह कर पाना दुष्कर ही नहीं, लगभग असंभव हो जाता है। सच तो यह है कि अनूदित पाठ इस नियति से जुड़ा है कि वह अनुवादक की अपनी भाषा-शैली का परिचायक बने। अनुवादक मूल रचना के कथ्य एवं शैली तथा शिल्प को अपने ढंग से आत्मसात करता है, समतुल्य रूपों की खोज में कुछ छूट जाने, कुछ नया जोड़ने की अनिवार्यता को पहचानता है। अनुवाद की उपरोक्त महत्वपूर्ण कसौटीयों के आधार पर **'**दी गाइड' के कुछ अंशों का तुलनात्मक परिशीलन निम्नलिखित है।

1. **मूल:-** 'I know what your problem is, but I wish to give the matter some thought. We cannot force vital solutions. Every questions must bide its time. Do you understand?' (Page No.-21)

हिंदी अनुवाद:- 'मैं तुम्हारी समस्या जानता हूँ पर उसके बारे में मुझे थोड़ा सोचना पड़ेगा। महत्वपूर्ण निर्णय लेने में समय लगता है। हर प्रश्न के उत्तर का एक निर्धारित समय होता है। समझ रहे हो न' (रमा तिवारी पृ. क्र.-22)

हिंदी अनुवाद :- मैं तुम्हारी समस्या को समझता हूँ**,** लेकिन उस पर और विचार करना चाहता हूँ। हम ज़बर्दस्ती कोई समाधान नहीं निकाल सकते। हर समस्या अपना पूरा वक़्त लेती है। समझे?(शिवदान सिंह और विजय चौहान पृ. क्र.-16)

तुलनात्मक परिशीलन:- यहाँ दोनों अनुवादों में वाक्य के स्तर पर भिन्नता है। दोनों ही अनुवादों में तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग है लेकिन उन्हें अनुवादकों ने अपनी पसंद के अनुसार ही प्रयोग किया है। हालांकि दोनों ही अनुवाद मूल का सटीक अर्थ देने में सफल रहे हैं।

2. मूल:- 'Yes Sir, Velan said. He drew his fingers across his brow and said, "Whatever is written here will happen. How can we ever help it?" 'We may not change it, but we may understand it.' Raju replied grandly. 'And to arrive at a proper understanding, time is needed.' Raju felt he was growing wings. (Page No.- 22)

हिंदी अनुवाद:- 'हाँ महाराज**',** वेलन ने कहा और अपने लालत को छूकर वह बोला**,** "जो कुछ यहाँ लिखा हुआ है वही होगा। हम लोग इसमें कुछ नहीं कर सकते।" "भाग्य के लेख को हम भले ही बदल न सकें, समझ तो सकते हैं," राजू ने गंभीरता से कहा, "और उसे समझने के लिए समय चाहिए," राजू को ऐसा महसूस हो रहा था मानो उसके पंख निकलते जा रहे हों। (रमा तिवारी पृ. क्र.-22)

हिंदी अनुवाद :- ""जी श्रीमान**,** जी श्रीमान**,"** वेलन ने उंगलियों से अपना मस्तक छूकर कहा**,** "यहाँ जो लिखा है वही होगा। हम लोग उसे रोक भी कैसे सकते हैं।" 'हम क़िस्मत को बदल नहीं सकते लेकिन समझ ज़रूर सकते हैं', राजू ने शान से कहा,'और ठीक से समझने के लिए समय की ज़रूरत है।' राजू को लगा उसके पंख उग आए हैं। (शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान पृ. क्र.-16)

तुलनात्मक परिशीलन:- 'We may not change it, but we may understand it' का अनुवाद रमा तिवारी ने 'भाग्य के लेख को हम बदल भले ही न सके, समझ तो सकते हैं' किया है जबकि दूसरे अनुवादकों ने 'हम क़िस्मत को बदल नहीं सकते,लेकिन समझ ज़रूर सकते हैं' किया है। दोनों ही अनुवादों में शब्द चयन भिन्न है लेकिन मूल अर्थ का संप्रेषण प्रभावी बन पड़ा है। शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने उर्दू शब्दों, जैसे क़िस्मत, ज़रूर, ज़रूरत आदि का इस्तेमाल किया है,जबकि रमा तिवारी ने तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने मूल के सपूर्ण अर्थों को पकड़ने की कोशिश की है, जबकि रमा तिवारी ने भावानुवाद किए हैं। भाषा और शैली की सूक्ष्मता पर बहुत ज़ोर नहीं दिया है।

'दि गाइड' उपन्यास के हिंदी अनुवादों का समीक्षात्मक विवेचन

'दी गाइड' के दोनों अनुवादों में शब्द के स्तर पर ऐसे विभिन्न शब्द मिलते हैं, जिनका अनुवादकों ने हिंदी की प्रकृति के अनुसार अनुवाद किया है। आर. के. नारायण के लेखन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि भले ही वे अंग्रेज़ी भाषा में अपनी कथा कह रहे होते हैं लेकिन परिवेश उनका पूरी तरह से स्थानिक होता है। उन्होंने मालगुडी नामक एक ऐसे क़स्बे की रचना की है जहां उनके पात्र मैसूर की संस्कृति के जीवंत प्रतिनिधि होते हैं। इसी के आधार पर प्रस्तुत उप अध्याय में 'दी गाइड' के कुछ अंशों का समीक्षात्मक विवेचन निम्नलिखित अनुसार किया गया है।

1. **मूल** :- 'Rainbow' (Page No. 72)

हिंदी अनुवाद :- इंद्रधनुष (रमा तिवारी पृ. 60)

हिंदी अनुवाद :- इंद्रधनुष (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 47)

समीक्षा :- प्रस्तुत उदाहरण उपन्यास में रोजी के संदर्भ में आया है। राजू जब रोजी की ओर आकर्षित होता है तब वह उसे ' इंद्रधनुष्य' जैसी लगती है। इंद्रधनुष्य में जिस तरह के सात रंग होते है, उसी तरह 'रोजी' में सात रंग दिखाई देते है। 'Rainbow' का अनुवाद दोनों अनुवादकों ने समान रूप में किया है। अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से दोनों अनुवादकों ने सफल अनुवाद किया है।

2. मूल :- 'Dreamer' (Page No. 113)

हिंदी अनुवाद :- स्वप्नलोक (रमा तिवारी पृ. 93)

हिंदी अनुवाद :- सपने में खोई (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 73)

समीक्षा :- उपन्यास में यह शब्द रोजी के संदर्भ में आया है जो कि उपन्यास में यह एक मुख्य पात्र है। रोजी हमेशा स्वप्नलोक में जीने वाली लड़की है। उपन्यास में उसी की वजह से सारी समस्याएँ उपस्थित होती हैं। दोनों अनुवादकों ने अपनी-अपनी शैली में अनुवाद किया है। दोनों अनुवाद संप्रेषणीयता की दृष्टि से सटीक हैं। रोजी हमेशा वास्तविक ज़िंदगी से दूर रहती है। उपन्यासकार ने इस पात्र को इस तरह प्रस्तुत किया है कि असल जीवन से उनका सामना हुआ है।

3. मूल :- 'Snake Women' (Page No. 222)

हिंदी अनुवाद :- सर्पकन्या (रमा तिवारी पृ. 174)

हिंदी अनुवाद :- संपेरिन (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 146)

समीक्षा :- प्रस्तुत शब्द उपन्यास में रोजी के संदर्भ में आया है। उपन्यास के अंतिम चरण में जब 'राजू' को 'रोजी' के बारे में सब कुछ पता चलता है और काफी सारी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, तब इस शब्द का प्रयोग करता है। शब्द के स्तर पर समीक्षा करते हुए यह पता चला कि दोनों अनुवादकों ने भिन्नता दिखाने का प्रयास किया है, लेकिन दोनों अनुवादों का एक ही अर्थ निकलता है। दोनों अनुवादक सटीक अर्थ देने में सफल रहे है।

सांस्कृतिक शब्दावली

1. मूल :- My mother was busy in kitchen, but she managed to come out for moment to observe the formality of receiving a guest.(Page No.-140)

हिंदी अनुवाद :- मेरी अम्मा रसोईघर में व्यस्त होने पर भी एक मिनट के लिए मेहमानों का स्वागत करने बाहर आई थीं। (रमा तिवारी पृ.-114)

हिंदी अनुवाद :- माँ रसोईघर में व्यस्त थी, लेकिन एक मेहमान का स्वागत करने की रस्म अदा करने के लिए वे किसी तरह बाहर आई थीं। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 92)

समीक्षा :- प्रस्तुत मूल और दोनों अनुवादित उदाहरणों में देख सकते हैं कि 'formality of receiving a guest' का अनुवाद रमा तिवारी ने ' मेहमानों का स्वागत करने' और शिवदान सिंह चौहान ने ' स्वागत करने की रस्म अदा' इस प्रकार किया है। मूलतः देखा जाये तो रमा तिवारी ने 'formality' शब्द के लिए समानार्थी शब्द का चयन न करते हुये यहाँ भावानुवाद किया है। वहीं शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने इस शब्द के लिए उर्दू शब्द 'रस्म अदा' शब्द का प्रयोग किया है। यह एक सही शब्द का चयन है, जिसके आधार पर कह सकते है कि यह एक सही अनुवाद है।

2. मूल :- Why can't she go to her husband and fall at his feet. (Page No.154)

हिंदी अनुवाद :- "यह अपने पति के पास जाकर उसके चरणों में क्यों नहीं गिर जाती? (रमा तिवारी पृ. 124)

हिंदी अनुवाद :- क्यों? वह अपने पति के पास जाकर उसके पाँवों में क्यों नहीं गिर सकती?। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 102)

समीक्षा :- प्रस्तुत उदाहरण में भारतीय संस्कृति को दर्शाया गया है। पत्नी से गलती होने पर पति के पैरो में पड़कर माफी माँगने की संस्कृति को दिखाया है। दोनों अनुवादों में समानता है। रमा तिवारी ने सिर्फ संयुक्त वाक्य का प्रयोग किया है वहीं, चौहान ने पहले प्रश्नार्थक चिन्ह का प्रयोग किया है। दोनों अनुवाद संप्रेषण की दृष्टि से सटीक लगते है।

नाते- रिश्ते की शब्दावली

1. मूल :- Father (Page No. 23)

हिंदी अनुवाद :- अप्पा (रमा तिवारी पृ.-23)

हिंदी अनुवाद :- बापू (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 17)

समीक्षा :- मूल में आए शब्द 'Father' का अनुवाद रमा तिवारी ने 'अप्पा' और चौहान ने 'बापू' के रूप में किया है। मूल उपन्यास दक्षिण भारत के सांस्कृतिक परिवेश में लिखा गया है इसलिए रमा तिवारी ने 'अप्पा' शब्द का प्रयोग करके उस परिवेश को अनुवाद में बचाए रखा है। चौहान ने हिंदी की शैली अनुसार अनुवाद किया है। दोनों अनुवाद सटीक हैं।

2. **मूल :-** Uncle (Page No. 172)

हिंदी अनुवाद :- मामाजी (रमा तिवारी पृ. 138)

हिंदी अनुवाद :- मामा (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 114)

समीक्षा :- प्रस्तुत उदाहरण के अनुवाद में जो भिन्नता दिखाई दे रही है, वह सिर्फ आदरभाव के रूप में है। मामा जो उम्र में बड़े हैं, उनको हम 'मामा' कह कर नहीं संबोधित कर सकते। इसलिए रमा तिवारी ने 'मामाजी' शब्द का प्रयोग किया है।

रीति-रिवाज की शब्दावली

1. मूल :- 'Let the offering go to Him, first; and we will eat the remnant. By giving to God, do you know how it multiplies, rather than divides ? (Page No. 18)

हिंदी अनुवाद :- "सर्वप्रथम देवता को भोग लगाना चाहिए। फिर हम लोग प्रसाद ग्रहण करेंगे। भगवान को चढाने से चीज बरकत होती है।" (रमा तिवारी पृ.-20)

हिंदी अनुवाद :- "यह इस देवता की पहली भेंट है। देवता को पहले भोग लगाकर हम लोग बचा-खुचा खा लेंगे। जानते हो, ईश्वर को भेंट चढाने के बाद खाने की चीजें कम होने की बजाय कितनी बढ़ती हैं? (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ.-14)

समीक्षा :- प्रस्तुत पाठ में भारतीय रीति-रिवाज को दर्शाया गया है। यहाँ पर भगवान को भोग चढाने से चीजों में वृद्धि होती है इस धारणा को उद्घाटित किया गया है। दोनों अनुवादों में भिन्नता दिखाई देती है। 'Let the offering go to Him first' का अनुवाद तिवारी ने 'सर्वप्रथम देवता को भोग लगाना चाहिए' और चौहान ने 'यह इस देवता की पहली भेंट है' इस प्रकार किया है। तिवारी का अनुवाद अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से अधिक सटीक लगता है।

2. मूल :- I washed myself at the well, smeared holy ash on my forehead, stood before the framed picture of gods hanging high up on the wall, and decided all kinds of sacred verse in a loud, ringing tone. (Page No.-11)

हिंदी अनुवाद :- मैं कुएं पर जाकर नहाता, भाल पर पवित्र भस्म लगाता और दीवार पर लटके हुए देवी-देवताओं के चित्रों के सामने खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से स्तुतियाँ बोलता। (रमा तिवारी पृ.-14)

हिंदी अनुवाद :- मैं कुएं पर जाकर स्नान करता, माथे पर भस्म मलता, फिर दीवार पर टंगी देवताओं की तस्वीर के आगे कुछ देर तक हाथ जोड़कर ऊँचे स्वर में प्रार्थना के गीत गाता। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ.-10)

समीक्षा :- प्रस्तुत उदाहरण में भारतीय रीति-रिवाज को दर्शाया गया है। खास तौर पर दक्षिण भारत के रीति-रिवाज को दिखाया गया है। सुबह-सुबह नहाकर भगवान की पूजा-अर्चना करना भारतीय रीति-रिवाज का अहम हिस्सा है। मूल के दोनों अनुवादों में काफी भिन्नता दिखाई देती है। "Washed" का अनुवाद तिवारी ने 'नहाना' और चौहान ने 'स्नान' किया है। 'Smeared Holy ash on my forehead' का अनुवाद तिवारी ने 'भाल पर पवित्र भस्म' और चौहान ने 'माथे पर पवित्र भस्म मलता' इस प्रकार किया है। अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से चौहान का अनुवाद सटीक लगता है।

संबोधन शब्दावली

1. मूल :- "You may want to ask why became a guide or when" (Page No. 10)

हिंदी अनुवाद :- तुम यह जानना चाहोगे कि मैं गाइड क्यों और कब बना। (रमा तिवारी पृ.13)

हिंदी अनुवाद :- तुम शायद जानना चाहो कि मैंने क्यों और कब गाइड का पेशा अख्तियार किया। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ.9)

समीक्षा :- प्रस्तुत दोनों अनुवादों में मूल उपन्यास में संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्द 'You' का अनुवाद दोनों अनुवादकों ने 'तुम' शब्द का प्रयोग किया है, जो मूल वाक्य के अर्थ को देखते हुए सटीक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार अपने से कम उम्र वाले के संदर्भ में 'तुम' संबोधन का प्रयोग किया जाता है।

2. मूल :- 'Shut up, Uncle' I said (Page No. 172)

हिंदी अनुवाद :- मामाजी, अब आप चुप रहिए। (रमा तिवारी पृ. 138)

हिंदी अनुवाद :- 'चुप रहो मामा' मैं चिल्ला पड़ा। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 114)

समीक्षा :- प्रस्तुत दोनों अनुवादों में संबोधन के स्तर पर काफी भिन्नता है। यहाँ पर राजू अपने मामा से बात कर रहा है जो कि राजू से उम्र में काफी बड़े हैं। इसलिए रमा तिवारी ने 'आप' शब्द का प्रयोग किया है। बल्कि चौहान ने शब्दानुवाद किया है जो संबोधन की दृष्टि से सही नहीं लगता है। मूल वाक्य में 'You' प्रयोग नहीं होने के बावजूद भी रमा तिवारी ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्य के अनुसार अनुवाद किया है।

रंग शब्दावली

1. मूल :- 'Colored Lights (Page No. 211)

हिंदी अनुवाद :- रंगीन बल्बों (रमा तिवारी पृ. 165)

हिंदी अनुवाद :- रंगीन रोशनियों (शिवदान चौहान, विजय चौहान पृ. 139)

समीक्षा :- यहाँ पर दोनों अनुवादों में भिन्नता दिखाई देती है। 'Colored Lights' का अनुवाद रमा तिवारी ने 'रंगीन बल्बों' के रूप में शब्दानुवाद किया है, वही चौहान ने 'रंगीन रोशनियों' के रूप में भावानुवाद किया है। अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से चौहान का अनुवाद सटीक लगता है।

2. मूल Purple play of Colour. (Page No.77)

हिंदी अनुवाद :- रंगों की सुंदर छटा। (रमा तिवारी पृ. 64)

हिंदी अनुवाद :- छाई लालिमा। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 50)

समीक्षा :- प्रस्तुत उदाहरण में दोनों अनुवादों में भिन्नता दिखाई देती है। 'Purple play of Color' का अनुवाद रमा तिवारी ने 'रंगो की सुंदर छटा' और चौहान ने 'छाई लालियाँ' इस प्रकार किया है। प्रस्तुत शब्द सूर्यास्त के संदर्भ में आया है इसलिए दोनों अनुवाद सटीक अर्थ देने में सफल रहे हैं।

हिंदी अनुवाद में लिप्यंतरण

1. मूल :- Magistrate (Page No. 20)

हिंदी अनुवाद :- मैजिस्ट्रेट (रमा तिवारी पृ. 19)

हिंदी अनुवाद :- मैजिस्ट्रेट (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 15)

समीक्षा :- मूल उपन्यासकार आर. के. नारायण के इस अंग्रेजी शब्द 'Magistrate' का दोनों अनुवादकों ने लिप्यंतरण 'मैजिस्ट्रेट' के रूप में किया है। हालांकि 'Magistrate' के लिए हिंदी में 'दण्डाधिकारी' शब्द उपलब्ध है, फिर भी अनुवादों के सटीक अर्थ संप्रेषण के लिए लिप्यंतरण का सहारा लेना अनिवार्य था।

2. मूल :- Puncture (Page No. 48)

हिंदी अनुवाद :- पंक्चर (रमा तिवारी पृ. 48)

हिंदी अनुवाद :- पंक्चर (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 37)

समीक्षा :- मूल के अंग्रेजी शब्द का दोनों अनुवादकों ने 'पंक्चर' ही लिप्यंतरण किया है। इस शब्द के लिए हिंदी में कोई भी शब्द उपलब्ध नहीं है। इसलिए लिप्यंतरण के अलावा कोई भी पर्याय नहीं था। लिप्यंतरण के कारण दोनों अनुवाद सटीक अर्थ संप्रेषण करने के लिए सफल रहे हैं।

शैली के धरातल पर अनुवाद समीक्षा

शैली के धरातल पर अनुवाद समीक्षा में अनुवादक मूलपाठ की विषयवस्तु और संरचनात्मक तत्वों के पर्यायवाची शब्द और अभिव्यक्तियाँ खोजता है। मूल पाठ की अधिकतर विशिष्टताएँ अनूदित रचना में विकृत नहीं होनी चाहिए। हर रचना की अपनी एक विशिष्ट अभिव्यक्ति होती है, जिसका निर्धारण उसकी शैली की अपनी निजी विशेषताओं के आधार पर होता है। अनुवादक को शैलियों के बारे सचेत रहना होता है ताकि मूल पाठ की शैलीगत विशेषताएँ परिलक्षित हो सकें। इसी के आधार पर प्रस्तुत समीक्षा में शैली के आधार पर आंचलिक तत्त्व, वार्ता शैली, भाषा शैली और मुहावरे/कहावतें आदि की समीक्षा की गई है, जो कि निम्न अनुसार हैं-

आंचलिक तत्व

1. मूल :- The show was held in an immense pavilion specially constructed with bamboos and coconut matting and decorated with brilliant tapestry, bunting, flowers, and coloured lights. The stage itself was so beautifully designed that Nalini, who generally ignored everything except the flowers at the end, cried, 'What a lovely place. I feel so happy to dance here.' (page No. 211)

हिंदी अनुवाद :- समारोह के लिए एक बड़ा भारी शामियाना बनाया गया फूलों, पताकाओं तथा रंगीन बल्बों से सजाया गया था। स्टेज भी इतनी सुंदर बनाई गई थी कि नलिनी, जो केवल बाद में दिए जाने वाले फूलों पर ध्यान देती थी, बोल उठी : "कितनी सुंदर जगह है ! यहाँ नृत्य करना बहुत अच्छा लगेगा।" (रमा तिवारी, पृ-165)

हिंदी अनुवाद :- ' समारोह के लिए बाँसों और नारियल की चटाइयों से एक विशाल पंडाल बनाया गया, उसे भड़कीले कपड़ों, झाड़ियों,फूलों और रंगीन रोशनियों से सजाया गया था। रंगमंच का डिजाइन इतना सुंदर था कि नलिनी ने, जो सिर्फ फूलों के हारों की ओर ध्यान देती थी, कहा, 'कितनी ख़ूबसूरत जगह है। यहाँ नाचकर मुझे बड़ी ख़ुशी होगी' (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान- पृ- 139)

समीक्षा :- नारायण के उपन्यास में आंचलिक तत्व काफी मात्रा में दिखाई देते हैं। दक्षिण भारत की संस्कृति ख़ासतौर पर म्हैसुर की झलकती है। प्रस्तुत उदाहरण में *'bamboos and* Coconut Matting' का अनुवाद रमा तिवारी ने नहीं किया। बल्कि शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान ने 'बांसो और नारियल की चटाइयों' इस प्रकार किया। रमा तिवारी ने मूल के साथ न्याय नहीं किया। *'decorated with brilliant tapestry, bunting, flowers and Colored Lights'* का अनुवाद रमा तिवारी ने 'जिसे फूलों, पताकाओं तथा रंगीन बल्बों से सजाया गया था' और शिवदान सिंह चौहान ने 'उसे भड़कीले कपडों, झाड़ियों, फूलों और रंगीन रोशनियों से सजाया गया था' इस प्रकार किया है। दोनों अनुवादों में वाक्य के स्तर पर भिन्नता दिखाई देती है। चौहान का अनुवाद अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से अधिक सटीक लगता है।

2.**मूल** 'Don't display too much rice and others stuff-keep the others shop for such things' advised the station master, 'Railway passengers won't be asking for tamarind and lentils during the journey.'

हिंदी अनुवाद :- स्टेशन मास्टर साहब ने सलाह दी थी कि चावल आदि परचून का सामान इस दुकान में न रख कर पुरानी दुकान में रखें। रेलयात्री इमली और दालें तो खरीदेंगे नहीं। (रमा तिवारी पृ-37)

हिंदी अनुवाद :- स्टेशन मास्टर ने सलाह दी थी, "बहुत ज्यादा चावल और वैसी चीजों की नुमाइश की यहाँ जरूरत नहीं है.....दूसरी दुकान में ये चीजें रखी जा सकती हैं? सफर के दौरान मुसाफिर इमली और दालों की माँग नहीं करें," (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ-28)

समीक्षा ;- प्रस्तुत उदाहरण में दक्षिण भारत के खान-पान के आंचलिक तत्व को दिखाया गया है। यहाँ पर इमली, चावल और दाल खाने में ज्यादा मात्रा में प्रयोग जाता है। 'Display' का अनुवाद रमा तिवारी ने 'न रख कर' और शिवदान चौहान और विजय चौहान ने उर्दू का शब्द 'नुमाइश' किया है जो अर्थ की बोधगम्यता के लिए सटीक है। *'Rice and others stuff* का अनुवाद तिवारी ने 'चावल आदि परचून' और चौहान ने 'चावल और वैसी चीजों' इस प्रकार किया है। *'tamarind and lentils'* का अनुवाद दोनों अनुवादकों ने 'इमली और दालें' इस प्रकार की है। *'Railway Passengers'* का अनुवाद तिवारी ने 'रेलयात्री' तथा चौहान ने उर्दू का शब्द 'मुसाफिर' इस प्रकार किया है। दोनों अनुवादकों ने भिन्न शैली का प्रयोग किया है। फिर भी दोनों अनुवाद अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से सटीक है।

वार्ता शैली

1. मूल:- Raju asked, `Where are you from?' dreading lest the other should turn round and ask the same question. The man replied, 'I'm from Mangal. 'Where is Mangal?'(Page No. 5)

हिंदी अनुवाद:- राजू ने पूछा : "कहाँ से आये हो?" और मन में डरा कि कहीं वह भी पलट कर यही प्रश्न न पूछ ले। उसने उत्तर दिया : "मैं मंगला गाँव से आया हूँ।" "कहाँ है मंगला गाँव (रमा तिवारी पृ. 9)

हिंदी अनुवाद :- आखिरकार राजू ने पूछा, "तुम कहाँ के रहने वाले हो?" उसे डर था कि कहीं अजनबी भी मुड़कर यही न पूछ बैठे। अजनबी ने उत्तर दिया, "मैं मंगल का रहने वाला हूँ...।" मंगल कहाँ है?" (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 5)

समीक्षा :- नारायण ने पात्रों द्वारा कहलाए गए वाक्यों को एकल अल्पविराम में रखा है, जबकि हिंदी के दोनों ही अनुवादकों ने दो अल्पविराम का प्रयोग किया है। शिवदान सिंह चौहान ने परिवेश के नाटकीय परिवेश के अंकन के लिए *आखिरकार* शब्द का प्रयोग किया है, जबकि रमा तिवारी ने नारायण के मूल पाठ के भावों को ग्रहण करते हुए संवाद की शुरूआत की है।

भाषा शैली

1. मूल:- Tell me about', Raju said, the old, old habit of affording guidance to others asserting itself. Tourists who recommended him to one another would say at one time,' If you are lucky enough to be guided by Raju, you will know everything. He will not only show you all the worth-while places, but also help you in every way', It was in his nature to get involved in other people's interests and activities. ' Otherwise,' Raju often reflected, ' I should have grown up like a thousand other normal persons, without worries in life,' (page no. 9)

हिंदी अनुवाद :- राजू के मन में उसी दूसरों को रास्ता दिखाने वाली पुरानी प्रवृत्ति ने सिर उठाया और वह बोल उठा: "क्या समस्या है? "उस जमाने में पर्यटक लोग आपस में उसकी चर्चा करते हुए कहते थे: "अगर खुशकिस्मती से राजू गाइड मिल गया तो फिर कोई समस्या नहीं होगी। सारे दर्शनीय स्थान दिखाने के अलावा भी वह हर तरह से मदद करेगा।" उसकी प्रकृति ही ऐसी थी। वह दूसरों के मामलों – उनकी रुचियों, गतिविधियों और समस्याओं में इस तरह उलझ जाता था कि उसे अपना भी ध्यान नहीं रहता था। कई बार उसने सोचा भी था कि यदि ऐसा नहीं होता तो वह भी हजारों सामान्य लोगों की भाँति निश्चित होकर जीवन बिताता। (रमा तिवारी पृष्ठ क्र.12)

हिंदी अनुवाद :- "मुझे बताओ क्या सवाल है," राजू ने दूसरों की मदद करने की अपनी पुरानी आदत से लाचार होकर पूछा। यात्री आपस में एक-दूसरे से उसकी सिफारिश करते हुए एक बार जरूर कहते थे, "अगर राजू तुम्हारा गाइड हुआ तो तुम सब कुछ जान जाओगे। वह न सिर्फ तुमको हर दर्शनीय स्थान दिखा देगा,

बल्कि और सब बातों में भी तुम्हारी मदद करेगा।" दूसरे लोगों के काम और मतलब की बातों में अपने को फँसा लेना उसका जैसे स्वभाव बन गया था।' नहीं तो,' राजू ने सोचा, 'मैं भी हजारों और लोगों की तरह नार्मल आदमी होता, जिनकी जिंदगी में फालतू चिंताएँ नहीं होती।' (चौहान, पृष्ठ क्र. 8) '

समीक्षा: मूल उपन्यास की शैली सरल, सहज और पाठक को अंत तक बाँधे रखती है। मूल लेखक की शैली को अनुवादकों ने अपनाया है। इस में लेखक की स्थिति को समझना और उसे महसूस करना उसी घटना के घटीत होने के साक्षी के रूप में अनुवादकों ने अनुवाद किया है। यहाँ पर दोनों अनुवादक सचेत दिखाई देते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखक की व्यक्तित्व को दोनों अनुवादक स्वंय जी रहे हैं।

2. मूल 'Is it true Swami, that the movement of aeroplanes distrurbs the clouds and so the rains don't fall ? Too many aeroplanes in the sky. Is it true, Swami, that the atom bombs are responsible for the drying of the clouds?' (page no-93)

हिंदी अनुवाद :- "क्या यह सच है स्वामी जी, कि हवाई जहाजों के उड़ने से बादल अस्त-व्यस्त हो जाते हैं और फिर वर्षा नहीं होती **?"** वे पूछते, "हवाई जहाज भी तो बहुत हो गए है !" या "क्या बादलों के सूख जाने का कारण एटम बम है?" (रमा तिवारी पृ.-78)

हिंदी अनुवाद :- "स्वामी जी, क्या यह सच है कि हवाई जहाजों से बादलों पर ज़ोर पड़ता है और बारिश होती है **?** आजकल आसपास में बहुत-से हवाई जहाज हैं।" स्वामीजी, क्या यह सच है कि एटम बमों की वजह से बादल सूख गए हैं।" (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ.-60)

समीक्षा :- उपर्युक्त पाठ में स्वामी जी और ग्रामीणों के मध्य संवाद है। मूल पाठ में प्रश्नार्थक वाक्यों की शैली का प्रयोग हुआ है। दोनों अनुवादकों ने इसी शैली को अपनाया है। अच्छे अनुवादक की यह भी कसौटी है कि अनुवाद अनुवाद न लगे। शैली के धरातल पर समीक्षा करने पर यह पता लगा है कि मूल लेखक की अभिव्यक्त शैली को दोनों अनुवादकों ने अपनाया है ताकि मूल पाठ और अनूदित पाठ में कुछ अंतर न दिखाई दे।

मुहावरे/कहावतें आदि

1. मूल :- An empty vessel makes much noise. (page no. 236)

अनुवाद :- रीता बरतन ज्यादा आवाज करता है। (रमा तिवारी, पृ.184)

अनुवाद :- खाली बर्तन ज्यादा शोर मचाता है। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान पृ. 154)

समीक्षा- प्रस्तुत कहावत के अनुवाद में वाक्य के स्तर पर भिन्नता दिखाई देती है लेकिन अर्थ के स्तर पर समानता है। अनुवादकों ने अंग्रेजी की कहावत के समतुल्य शब्दों का चयन किया है। हिंदी की भाषा प्रकृति और परिवेश को ध्यान में रखते हुए दोनों अनुवादक मूल कहावत का अनुवाद करने और अर्थ देने में सफल रहे हैं।

2. मूल :- All things have to wait their hour. (page no. 51)

हिंदी अनुवाद- सभी चीजों को उचित समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है (रमा तिवारी, पृ.44)

हिंदी अनुवाद- हर चीज का अपना वक्त होता है जिसके लिए इंतजार करना पड़ता है। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान, पृ. 34)

समीक्षा- प्रस्तुत कहावत का अनुवाद, अनुवादकों ने अपनी-अपनी शैली में किया है। इसमें वाक्य के स्तर पर भिन्नता दिखाई देती है लेकिन अर्थ के स्तर पर समानता है। रमा तिवारी ने शब्दानुवाद का प्रयोग किया है, बल्कि चौहान ने भावानुवाद किया है। दोनों अनुवादक सटीक अर्थ देने में सफल हुये हैं।

3. मूल :- Probably a man with an abnormal capacity for trust. (Page no. 115)

अनुवाद :- आँख मूँद कर विश्वास करता था। (रमा तिवारी, पृ.95)

अनुवाद- उसमें दूसरों पर विश्वास करने की असाधारण क्षमता थी। (शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान, पृ. 75)

समीक्षा :- प्रस्तुत वाक्य का अनुवाद रमा तिवारी ने मुहावरे के माध्यम से किया है, लेकिन चौहान ने शब्दानुवाद किया है। रमा तिवारी ने यहाँ पर अपने अनुवाद कौशल का परिचय दिया है। दोनों अनुवाद अर्थ संप्रेषण की दृष्टि से सफल रहें हैं।

' दी गाइड ' उपन्यास के हिंदी अनुवादों का मूल्यांकन

1. **मूलः-** 'If you are lucky enough to be guided by Raju, you will know everything. He will not only show you all the worth places, but also help you in every way.' It was his nature to get involved in other people's interest and activities. (Page No. 9)

हिंदी अनुवादः- 'अगर ख़ुशक़िस्मती से राजू गाइड मिल गया तो फिर कोई समस्या नहीं होगी। सारे दर्शनीय स्थान दिखाने के अलावा भी वह हर तरह से मदद करेगा।' उसकी प्रकृति ही ऐसी थी। वह दूसरों के मामलों—उनकी रुचियों, गतिविधियों और समस्याओं में इस तरह उलझ जाता था कि उसे अपना भी ध्यान नहीं रहता था। **(रमा तिवारी पृ. क्र. 12)**

अनुवाद वैशिष्ट्यः- प्रस्तुत उदाहरण में भाषा के सहज प्रवाह को अनुवादक ने व्यक्त किया है। समूचे विवरण की प्रधानता भी उभर कर सामने आती है और मूल अर्थ का कलेवर भी कायम है। इस तरह यह अनुवाद अपनी विशिष्ट शैली को भी अभिव्यक्त करते हैं।

2. मूलः- you may want to ask why I became a guide or when, I was a guide for the same reason as someone else is a signaler, porter, or guard. It is fated thus. (P. No. 10)

हिंदी अनुवादः- तुम यह जानजा चाहोगे कि मैं गाइड क्यों और कब बना। कोई तार बाबू कुली या गार्ड क्यों बनता है यह सब क़िस्मत का खेल है। **(रमा तिवारी पृ. क्र. 13)**

अनुवाद वैशिष्ट्यः- प्रस्तुत अनुवाद में अनुवादक ने 'I was a guide for the same reason as someone else' का शब्दशः अनुवाद नहीं किया है। फिर भी लक्ष्य भाषा के अर्थ पर कोई असर नहीं पड़ा है। साथ में, अनुवादक ने 'It is fated thus' का अनुवाद 'यह सब क़िस्मत का खेल है' किया है जो कि उपरोक्त मूल का भावानुवाद है, जो हिंदी के सांस्कृतिक परिवेश से उपजा है।

निष्कर्ष

Indian Streams Research Journal
Vol -3 , ISSUE –6, July.2013
ISSN:-2230-7850 Available online at www.isrj.net

'दि गाइड' नारायण के प्रमुख रचनाओं में से प्रमुखतम है। नारायण के साहित्यिक योगदान के आकलन में 'दि गाइड' का स्थान सर्वोपरि है। सन 1958 में इसका प्रकाशन हुआ और दो साल बाद ही, सन 1960 में इसे साहित्य अकादमी सम्मान से नवाज़ा गया। नारायण की रचनाओं में व्यंग्य का इस्तेमाल उनके लेखन शैली की एक अनूठी विशेषता है। उनकी व्यंग्य दृष्टि अन्यत्र कहीं भी इतनी तीक्ष्ण तथा नैतिक सरोकारों से जुड़ी हुई नहीं है जितनी कि इस उपन्यास में है। इस उपन्यास में उनके लेखन की ख़ास नारायणी शैली, जिसमें व्यंग्य, विनोद, हास्य और जन-जीवन के अथाह सागर से निसृत ज़िंदगी के उलट-फेर प्रमुख होते हैं, ही मुख्य विषय-वस्तु है किंतु यहाँ व्यंग्य न सिर्फ़ बहुआयामी है, बल्कि इसमें रोचक उलझने तब तक बढ़ती चली जाती हैं जब तक कि अंत में इन दिलचस्प घटनाओं का पिरामिड ध्वस्त नहीं हो जाता और नायक उसके नीचे दबकर दिवंगत नहीं हो जाता।

आर. के. नारायण ने अपने उपन्यासों में मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रचुर प्रयोग मिलते हैं। ऐसे प्रयोग अनुवाद में समस्याजनक साबित होते हैं, यह उनके अनुवादकों सहित विभिन्न भाषाशास्त्रियों ने भी माना है। अनुवाद संबंधी सैद्धांतिक विवेचन में यह कहा गया है कि इनके अनुवाद के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य मुहावरों-कहावतों की खोज की जाती चाहिए, और उनके सुलभ न होने पर भाव को स्पष्टतः अर्थ अभिव्यंजित करने पर बल देना चाहिए। आर. के. नारायण के *गाइड* उपन्यास के अनुवादों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समतुल्य रूपों की अपेक्षा अनुवादकों ने भावानुकूल अभिव्यक्ति की प्रणाली अपनाई है, जिससे उनके अनुवाद में व्याख्यात्मकता एवं विस्तार का समावेश हुआ है। कहीं-कहीं अनुवादकों ने प्रसंगानुसार सार-रूप में भाव को प्रस्तुत करने की पद्धति भी अपनाई है और कहीं-कहीं हिंदी के समतुल्य मौलिक देशज मुहावरों और कहावतों का इस्तेमाल किया है।

आर. के. नारायण ने *गाइड* उपन्यास में दक्षिण भारत के सांस्कृतिक परिवेश का शब्दांकन किया है। उन्होंने कर्नाटक के प्रमुख नृत्य *भरत-नाट्यम* को सांस्कृतिक ताने-बाने और कथानक के केंद्र में रखा है, जहाँ उपन्यास का प्रमुख पात्र राजू उपन्यास की नायिका रोजी के नृत्य से सम्मोहित होते हुए अपनी ज़िंदगी के बदलावों की कथा कहता है। इसके अतिरिक्त खान-पान, बोलचाल, रहन-सहन और रीति-रिवाज़ के स्तर पर दक्षिण भारतीय संदर्भों की समृद्ध झलकियाँ देखने को मिलती हैं। दक्षिण भारत में इडली एक प्रमुख भोज्य-पदार्थ है और वहाँ परंपरागत भोज-समारोहों में आज भी केले के पत्ते में भोजन किया जाता है। नारायण इन परंपराओं का प्रमुखता से ज़िक्र किया है।

विशिष्ट दक्षिण भारतीय संदर्भों के बावजूद नारायण एक अखिल-भारतीय सामाजिक संदर्भों की कथा-भूमि निर्मित करते हैं, जिसमें भारतीय धर्म-ग्रंथों, रामायण, महाभारत, गीता आदि के अतिरिक्त, प्राचीन संस्कृत साहित्य जैसे भरतमुनि के नाट्यशास्त्र आदि का उल्लेख प्रमुखता से आता है।

हिंदी में प्रस्तुत उपन्यास के दो अनुवाद हुए हैं, जो हिंदी के विशाल पाठक वर्ग की ज़रूरतों और गाइड उपन्यास के प्रति उनके लगावों को प्रदर्शित करते हैं। इस अर्थ में, अनुवादक का कार्य रचनाकार की अपेक्षा कहीं ज़्यादा स्तरों पर चुनौती भरा रहा होगा। इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि रचनाकार का

जुड़ाव जहाँ सीधे समाज से होता है वहीं अनुवादक को मूल भाषा में लिखी रचना और उस भाषा के सामाजिक परिवेश के साथ साथ उस अनूदित की जाने वाली भाषा के सामाजिक परिवेश को भी ध्यान में रखना होता है। अनुवादक को कम से कम दो भाषाओं में सिद्धहस्त होना होता है।

अर्थ संप्रेषण की समस्या अनुवाद विधा की सबसे बड़ी समस्या होती है। अनुवाद कोई अनुकृति नहीं होती, बल्कि वह गहरे अर्थों में किसी कृति की पुनर्रचना होती है। अनुवाद की सार्थकता की दो प्रमुख कसौटियाँ होती हैं। पहली यह कि क्या अनुवाद मूल रचना में निहित द्वंद को अनुवाद में भी संप्रेषित कर पा रहा है और दूसरी यह कि रचना के अंतरंग, कोमल स्पर्श की अनुभूति को यथासंभव बरक़रार रखा गया है कि नहीं?

अनुवाद में व्यंग्य, ख़ासतौर से अगर वह शाब्दिक न होकर शैलीगत स्तर पर हो तो उसे मूल अर्थ और भावों के साथ बरक़रार रख पाना आसान नहीं होता। नारायण की लेखन शैली की प्रमुख विशेषता व्यंग्य की तीखी धार है। इस धार को रमा तिवारी ने हिंदी में बख़ूबी, रोचक तरीक़े से साधा है और उसे रूपांतरित किया है। रमा तिवारी ने मूल रचना में व्यक्त भाषिक विमर्ष को अपने अनुवाद के ज़रिए विस्तारित ही किया है, उसे सीमित करने की ग़लती नहीं की है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि रमा तिवारी ने मूल 'दि गाइड' के संवेदनात्मक ज़िम्मेदारियों का बड़ी कुशलता से निर्वहन किया है। बतौर अनुवादक उन्होंने अपने सर्जक होने के व्यक्तित्व-वैशिष्ट्य का ही परिचय दिया है।

अनुवादक रमा तिवारी ने भावानुवाद और शब्दानुवाद, दोनों के मिश्रण से एक ऐसा अनुवाद किया है जो मूल रचना की सुंदरता को सहेजता है। पाठक को भाषागत संस्कारों से परिचित तो कराता ही है, साथ ही, हिंदी की साहित्यिक परंपरा का परिष्कार भी करता है। उन्होंने हिंदी भाषा में स्वीकारे जा चुके अंग्रेज़ी के शब्दों का लिप्यंतरण भर किया है। रमा तिवारी का कोई भाषाई शुद्धता का आग्रह नहीं है। जैसे लिपिस्टिक और पावडर जैसे आम प्रचलित शब्दों का उन्होंने लिप्यंतरण मात्र किया है, जिससे संप्रेषण में काफ़ी सरलता दिखती है। कई जगह ऐसे भी उदाहरण हैं, जहाँ अनुवाद काफ़ी प्रभावी बन पड़ा है। भाषा की लयबद्धता, अलंकारों के प्रयोग आदि में यह विशिष्टता देखने को मिलती है।

'दि गाइड' का हिंदी में एक अन्य अनुवाद हुआ है। अनुवादक द्वय, शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने मिलकर यह महती अनुवाद किया है। उन्होंने अपनी संस्कृति में इस उपन्यास के मौलिक छायांकन की ज़रूरत को देखते हुए इसका अनुवाद किया है। रमा तिवारी के अनुवाद में जहाँ भाषिक संरचना केंद्रीय तत्व है, वहीं शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान के मूल में अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों की केंद्रीय भूमिका और उनकी ज़रूरतें सक्रिय हैं। शैलीगत विशिष्टताओं को सहेजते हुए इन अनुवादकों ने प्रस्तुत अनुवाद को हिंदी की सांस्कृतिक विरासत की परंपरा से जोड़ा है। एक तरह से यह भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की हिंदी में लगभग मौलिक और अटूट तौर पर एक विश्वसनीय पुनर्प्रस्तुति है। अनुवादकों ने 'दि गाइड' के अनुवाद के माध्यम से अपनी सर्जकीय मेधा का ही विस्तार किया है। संरचनागत लक्ष्यों और सामाजिक परिवेश की मौलिकता को हासिल करने के लिए अनुवादकों ने हिंदी मानस-जगत की अभिव्यक्ति में इस अनुवाद को ढाला है। 'दि गाइड' की विराटता का यह एक अकाट्य प्रमाण है कि प्रस्तुत उपन्यास के हिंदी में दो स्वतंत्र और सफल अनुवाद संपन्न हुए हैं।

शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान ने मूल कृति का अनुवाद करते समय अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित की है। मूल कृति के प्रभाव अनुवाद में भी मौलिक रूप से प्रकट हुए हैं। अनुवाद संपूर्णता में पठनीय बन पड़ा है। अनुवाद में वाक्यों को संक्षिप्त नहीं किया गया है। औपन्यासिक प्रभाव के लिए कई जगह भावानुवाद किया गया है। यह अनुवाद अपनी संप्रेषणीयता की वजह से ज़्यादा प्रभावित करता है और वाक्यों की संप्रेषणीयता को महत्व देते हुए अनुवादकों ने मूल कृति और अनुवाद की समरूपता को प्राथमिकता दी है। अनुवादकीय प्रस्तुति में अनुवादक मूल जैसी अनुभूति दिलाने में सफल रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, कुसुम : अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, 2008, साहित्य सहकार, दिल्ली।

आनंद प्रकाश (अनुवादक) : जॉर्ज लुकाच : उपन्यास का सिद्धांत, 2007, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।

अय्यर, एन.ई.विश्वनाथ : अनुवाद भाषाएँ—समस्याएँ, 1992, ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली।

कलवार, किशोरीलाल : हिंदी अनुवाद परंपरा-एक अनुशीलन, 2009, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली।

कुमार, सुरेश : अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, 2005, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

गाबा, ओमप्रकाश : अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ, 1978, शब्दकार, दिल्ली।

गुप्त, गार्गी : अनुवाद बोध, 2001, भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली

गुप्ता, विभा : अनुवाद के भाषिक पक्ष, 2007, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

गोपीनाथन, जी. : अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, 2001, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

गोरे, भारती : अनुवाद निरूपण, 2004, विकास प्रकाशन, कानपुर।

गोस्वामी, कृष्णकुमार : अनुवाद विज्ञान की भूमिका, 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

चौधरी, इंद्रनाथ : तुलनात्मक साहित्य—भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

चौहान, शिवदान सिंह और चौहान, विजय (अनुवादक) : गाइड, 2008, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली।

जोशी, ज्योतिष : उपन्यास की समकालीनता, 2009, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

टंडन, पूरनचंद : अनुवाद साधना, 2007, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।

टंडन, पूरनचंद और सेठी, हरीश कुमार : अनुवाद के विविध आयाम 2005, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

तिवारी, बालेंदु शेखर : अनुवाद विज्ञान (संपादित), 2003, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

तिवारी, भोलानाथ : अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रविधि, 2009, किताबघर, नई दिल्ली।

तिवारी, भोलानाथ और चतुर्वेदी महेंद्र : काव्यानुवाद की समस्याएँ : साहित्य का अनुवाद, 1980, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली।

तिवारी, भोलानाथ : अनुवाद कला, 1972, शब्दाकार, दिल्ली।

तिवारी, रमा (अनुवादक) : गाइड, 2005, साहित्य चंद्रिका प्रकाशन जयपुर।